ISSN : 2583-2948

होना न होकर भी

जितेंद्र श्रीवास्तव
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
फोन – 011-29532098
ईमेल – jksrivasta@ignou.ac.in

बहुत उदासी है

मन नहीं लगता है यहाँ

अजीब सी घबराहट होती है

बार बार भागता हूँ यहाँ से

बार – बार लौटता हूँ फिर

स्मृतियों से बचाना चाहता हू नज़र

पर बचा नहीं पाता

वे हर पल निहारती हैं मुझे

हर जगह स्पर्श है तुम्हारा

वायुमंडल में तीर रही है देह गंध स्वप्न गंध में घुलकर

सुलेखा ओ सुलेखा !

मैं होकर भी खो गया हूँ कहीं

तुम न होकर भी बैठी हो यहीं !!

ISSN : 2583-2948

प्राथमिकता का व्याकरण

बहुत जटिल होता है प्राथमिकता का व्याकरण

वैसे यह निर्भर करता है व्यक्ति व्यक्ति पर

कुछ लोग अपना अर्जित सब कुछ गंवा देते हैं

पर नहीं बदलते प्राथमिकता

कुछ बदल लेते हैं करवट की तरह

अधरों पर लिए कातिल मुस्कान

कुछ के बारे में आप अनुमान लगा सकते हैं

कुछ के बारे में हो सकती है दुविधा

पर कुछ परे होते हैं अनुमान से ब्रूटस की तरह

हालाँकि उनके पास जायज वजह नहीं होती

जैसी थी ब्रूटस के पास

एक दिन जब आपको

सबसे अधिक जरूरत होती है किसी विश्वसनीय की

और आप उठाते हैं नज़र

तो कोई नहीं दिखता है उनमें से दूर - दूर तक

जिन पर आपने किया होता अपने कंधों सा भरोसा

वे कहीं ओझल हो जाते हैं सफलता और सुख के जादुई कोहरे में

anukarsh@alliance.edu.in

आपकी शिकायत उलझकर रह जाती है

कभी मुस्कान तो कभी आंसुओं के भीगेपन में

यह प्राथमिकता भी कमाल की चीज है

पल भर में बदल देती है रिश्तों का छंद !

नई पत्तियों के मौसम में

कल तुम आई

बहुत अच्छा लगा

खिल उठे मन के रोम रोम

लगा जैसे लौट आए हैं पुराने दिन

नई पत्तियों के मौसम में

भ्रम हुआ जैसे बीत गए पतझड़ वाले दिन – रैन

पर तुमको तो लौटना ही था अपने सघन संसार में

मैंने चाहा

पूछूँ लंबी अनुपस्थिति और उपेक्षा का कारण

पर नहीं पूछा

ISSN : 2583-2948

बहुत अच्छा लग रहा था तुम्हारा आना

तुम्हारी उपस्थिति में वसंत था

चाहे कुछ पल का ही

मैं इस मिले समय को

चलकर आए वसंत को

नहीं भेजना चाहता था शिकायत की गोद में

तुम्हारा जाना तय था तुम्हारे आने में

बहुत से दबाव झांक रहे थे तुम्हारी पुतलियों से

मैं कैसे रोक पाता तुम्हें !

तुम चली गई एक फर्ज़ पूरा कर दूसरे को पूरा करने

जैसे करती आई हैं स्त्रियाँ सदा – सदा से

कभी चाहकर कभी दबाव में।

anukarsh@alliance.ed